भोर भई

रमेश थानवी

चित्रांकन
कल्लोल मजूमदार

नेहरू बाल पुस्तकालय

भोर भई

रमेश थानवी

चित्रांकन
कल्लोल मजूमदार

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

स्वाति, ज्योति और गुनगुन
की मम्मी श्रीमती उर्मिला थानवी
की मधुर स्मृति को
सादर निवेदित

ISBN 978-81-237-3949-6
पहला संस्करण : 2002
ग्यारहवीं आवृत्ति : 2020 (*शक* 1941)

Bhor Bhai *(Hindi)*

₹ 45.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in
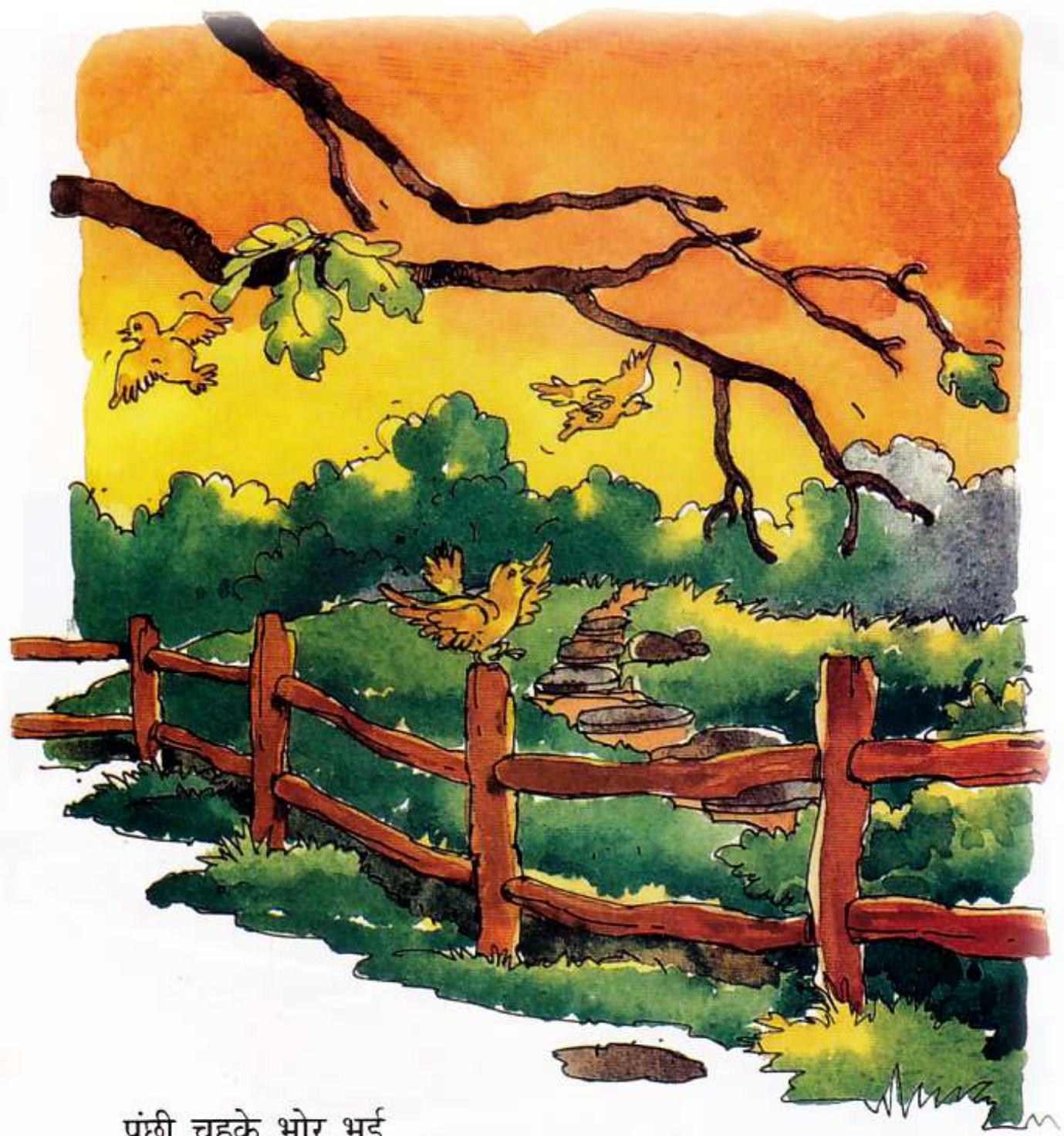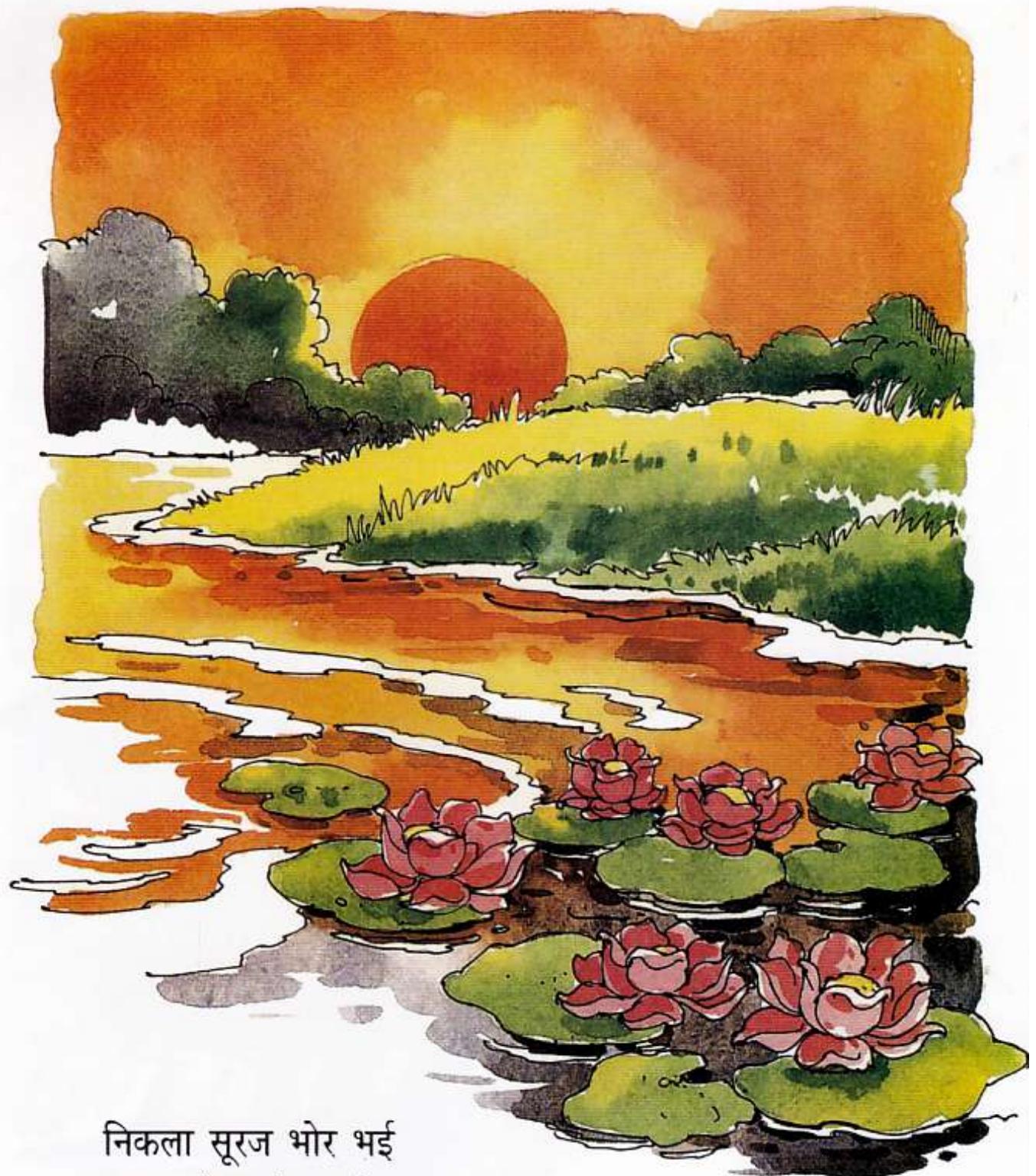
उठ कर देखो भोर भई
रात गयी और भोर भई
गया अंधेरा भोर भई
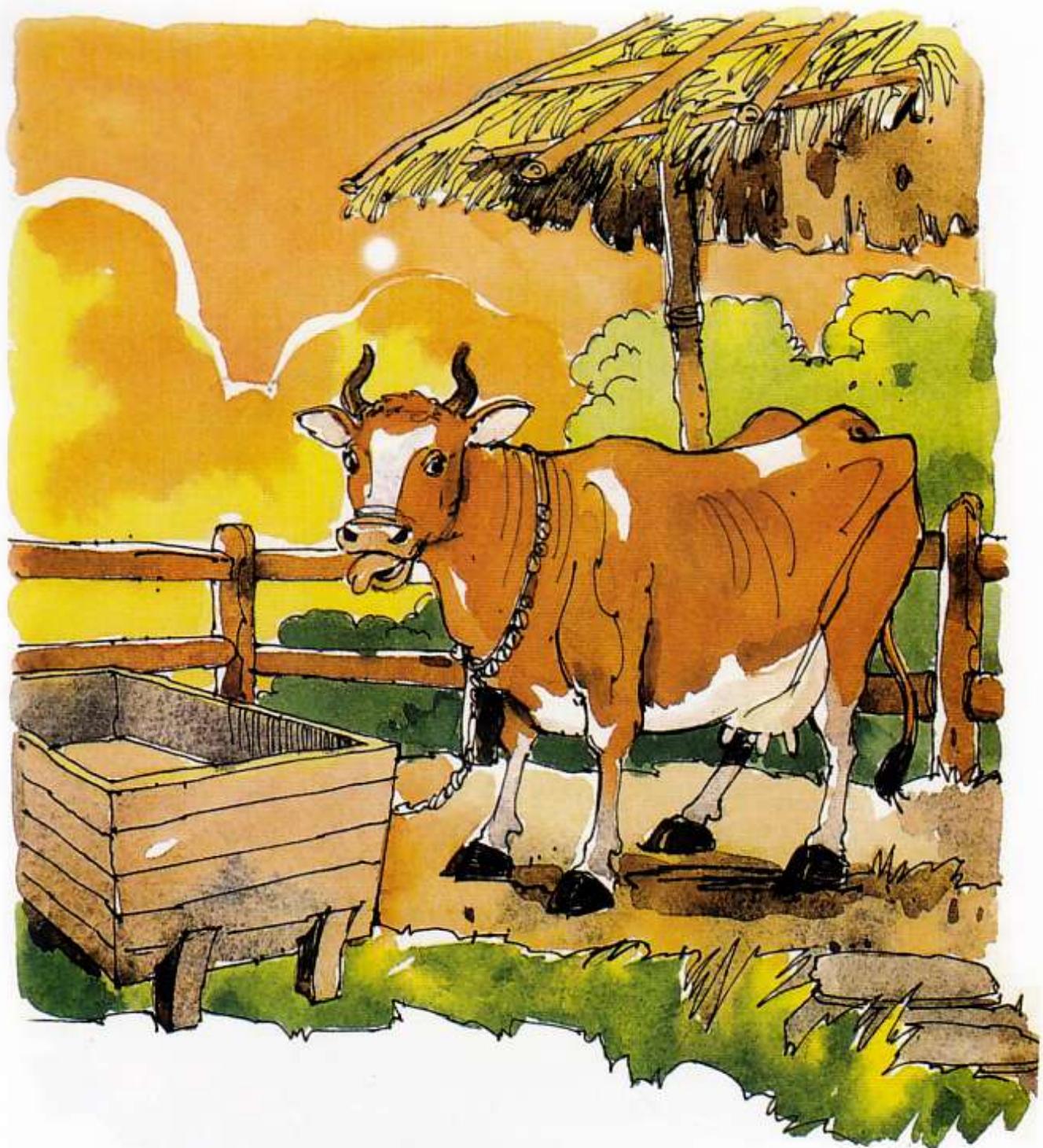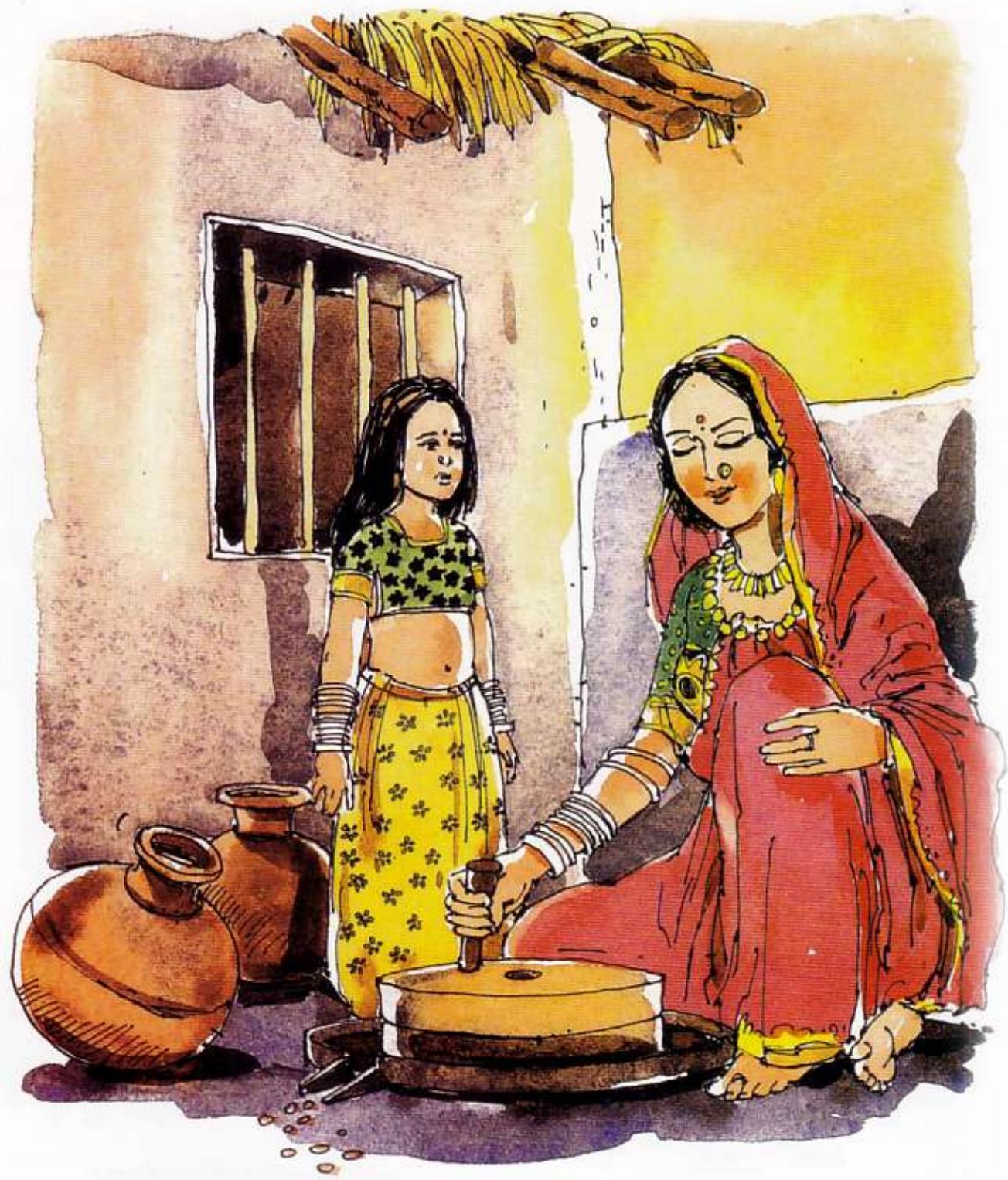
पंछी चहके भोर भई
बोली चिड़िया भोर भई

निकला सूरज भोर भई
हुआ सवेरा भोर भई
जग कर देखो भोर भई

अम्मा जागी भोर भई

गाय रंभाई भोर भई

चाकी चल दी भोर भई

दादी ने छेड़ी परभाती
गूंजे हरजस भोर भई

उड़ा कबूतर भोर भई

चुग्गा डाला भोर भई
लो देखो ये भोर भई

गायें नीरी भोर भई

दूध निकाला भोर भई

छाछ बिलोई भोर भई

निकला मक्खन भोर भई

हुआ कलेवा भोर भई

लगी बुहारी भोर भई
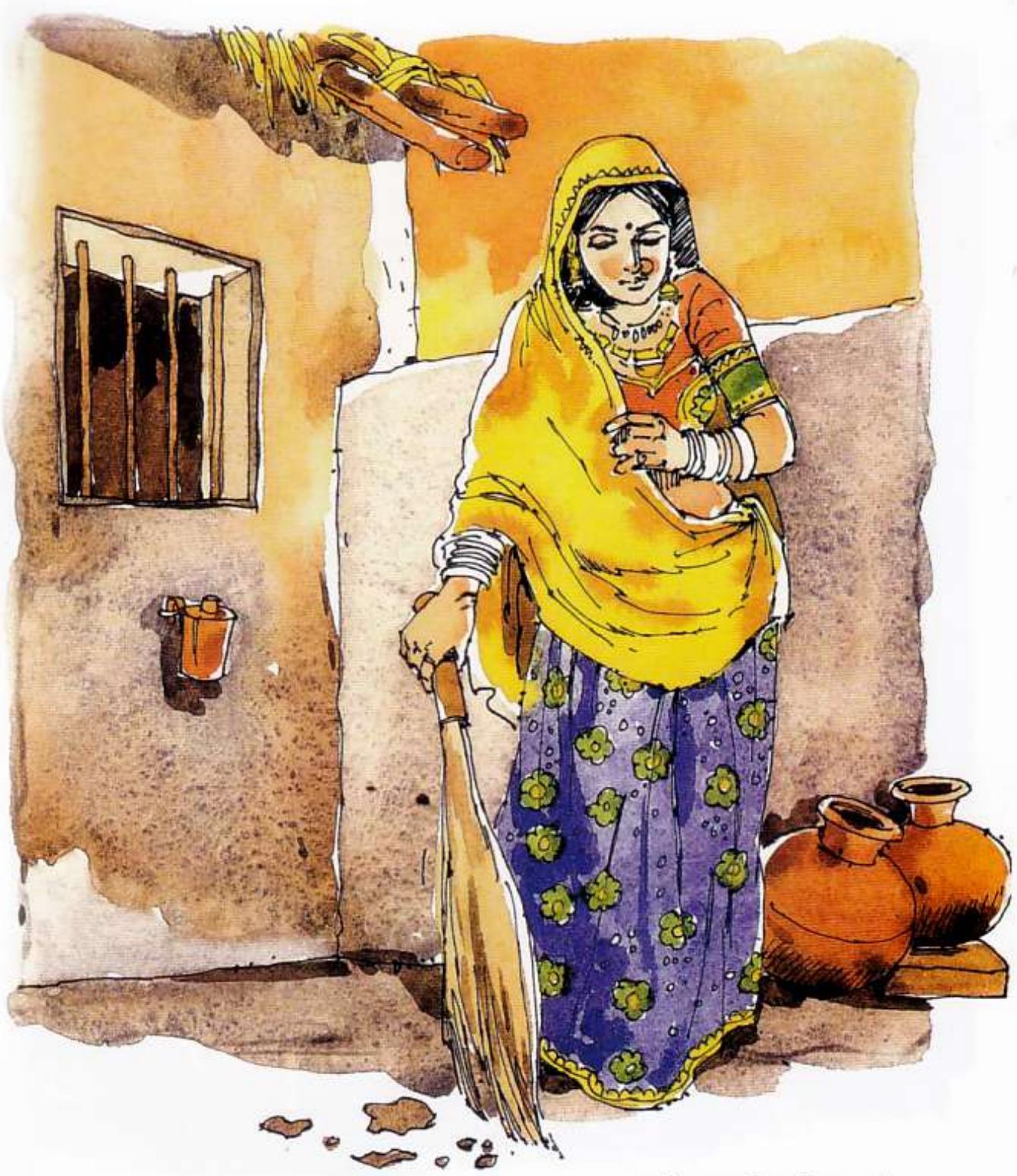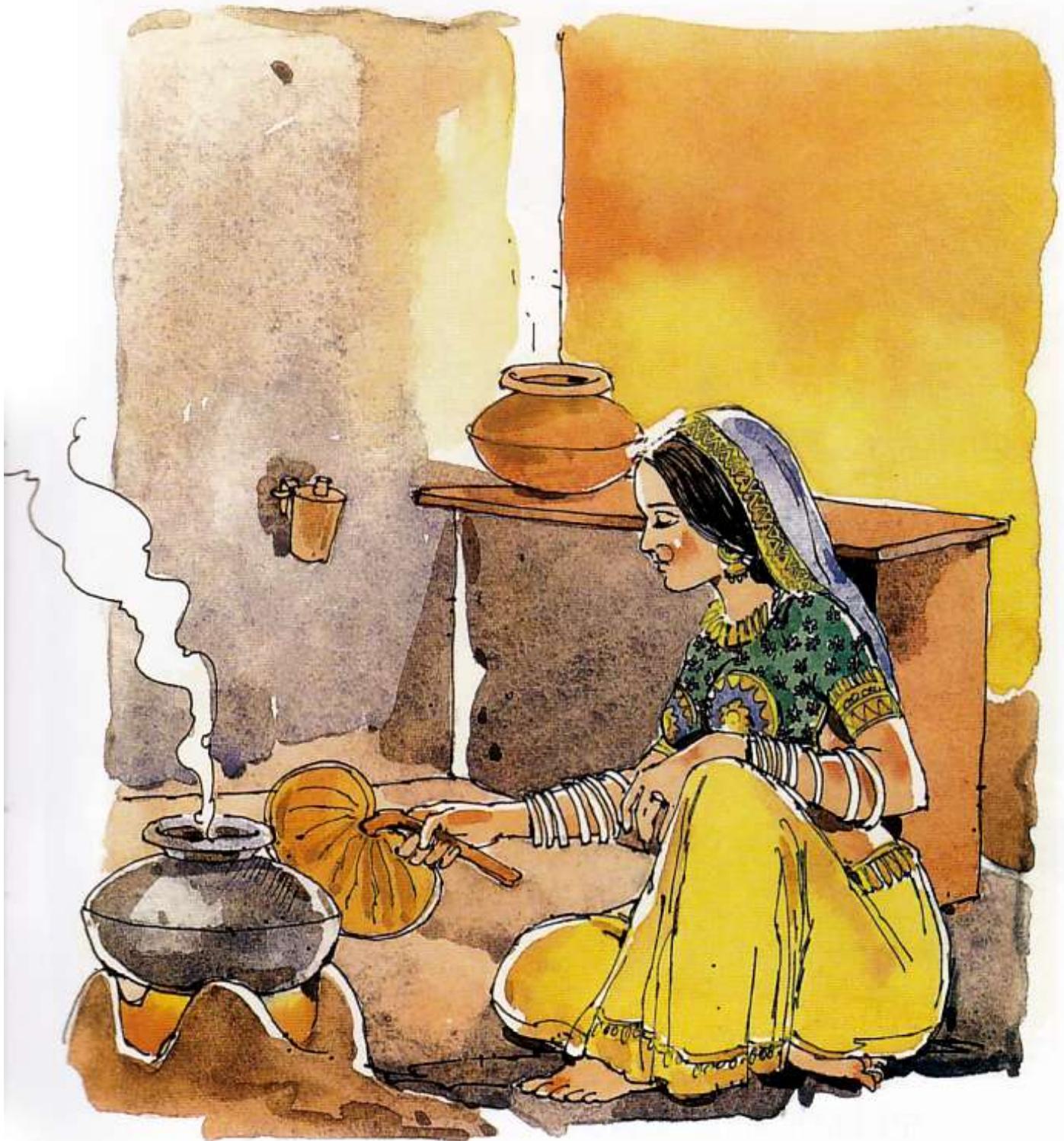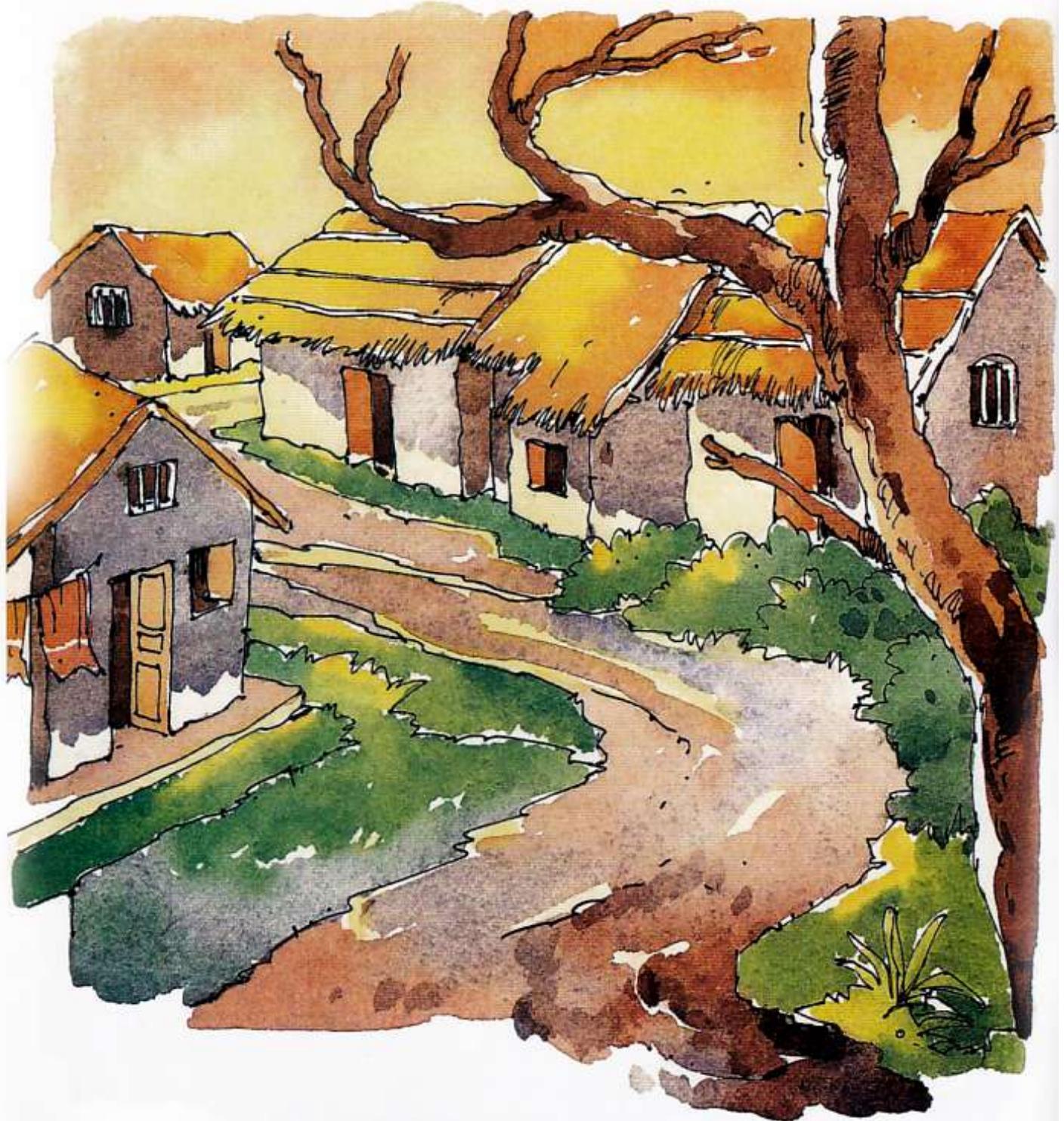
स्नान ध्यान से निपटी अम्मा

चूल्हा सुलगा भोर भई
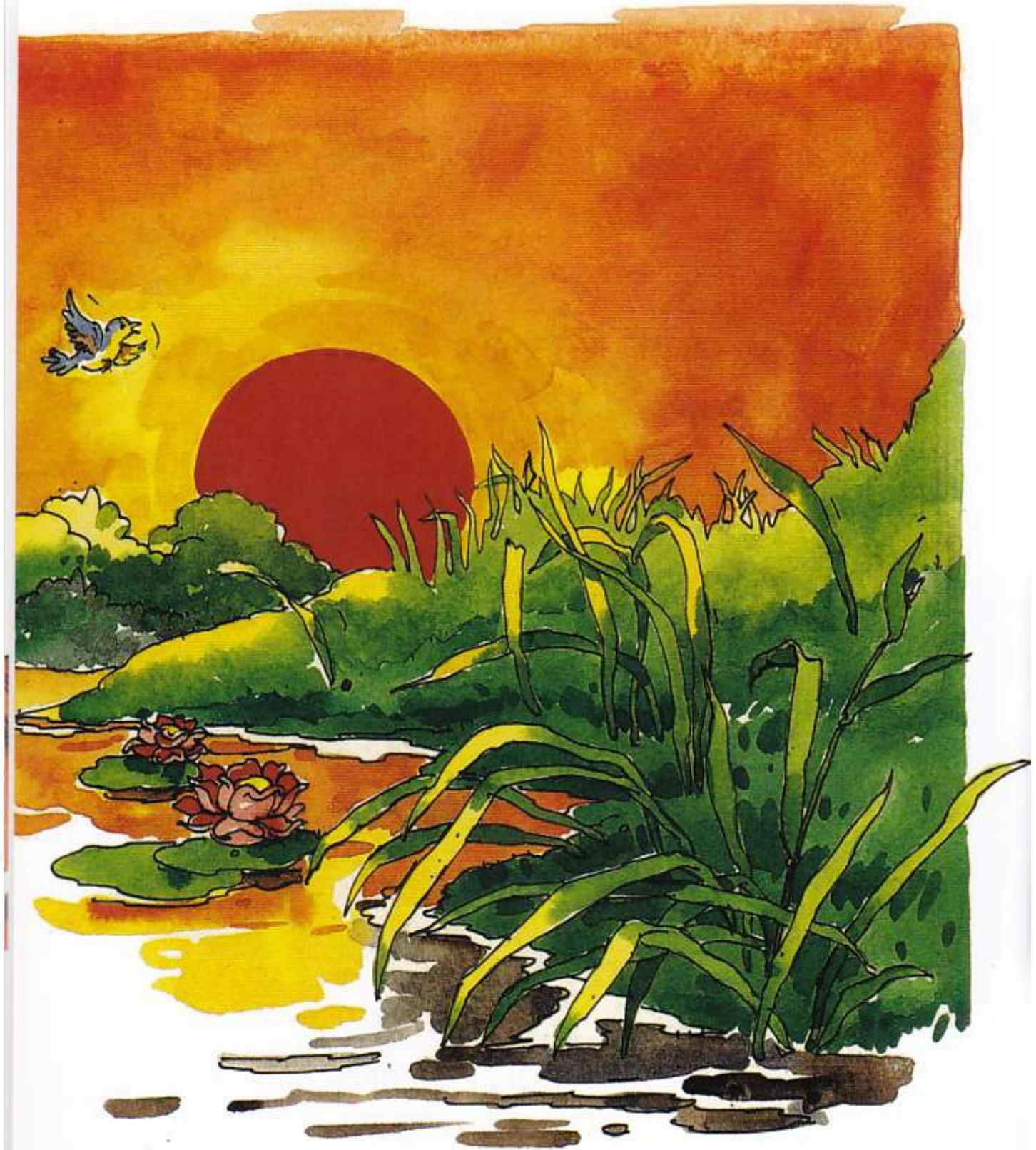
सूर्य किरण आंगन में बिखरी
गांव-गांव में भोर हुई।

भोर भई

उठ कर देखो भोर भई
रात गयी और भोर भई
गया अंधेरा भोर भई

पंछी चहके भोर भई
बोली चिड़िया भोर भई

निकला सूरज भोर भई
हुआ सवेरा भोर भई
जग कर देखो भोर भई

अम्मा जागी भोर भई

गाय रंभाई भोर भई

चाकी चल दी भोर भई

दादी ने छेड़ी परभाती
गूंजे हरजस भोर भई

उड़ा कबूतर भोर भई

चुग्गा डाला भोर भई
लो देखो ये भोर भई

गायें नीरी भोर भई

दूध निकाला भोर भई

छाछ बिलोई भोर भई

निकला मक्खन भोर भई

हुआ कलेवा भोर भई

लगी बुहारी भोर भई

स्नान ध्यान से निपटी अम्मा

चूल्हा सुलगा भोर भई

सूर्य किरण आंगन में बिखरी
गांव-गांव में भोर हुई।
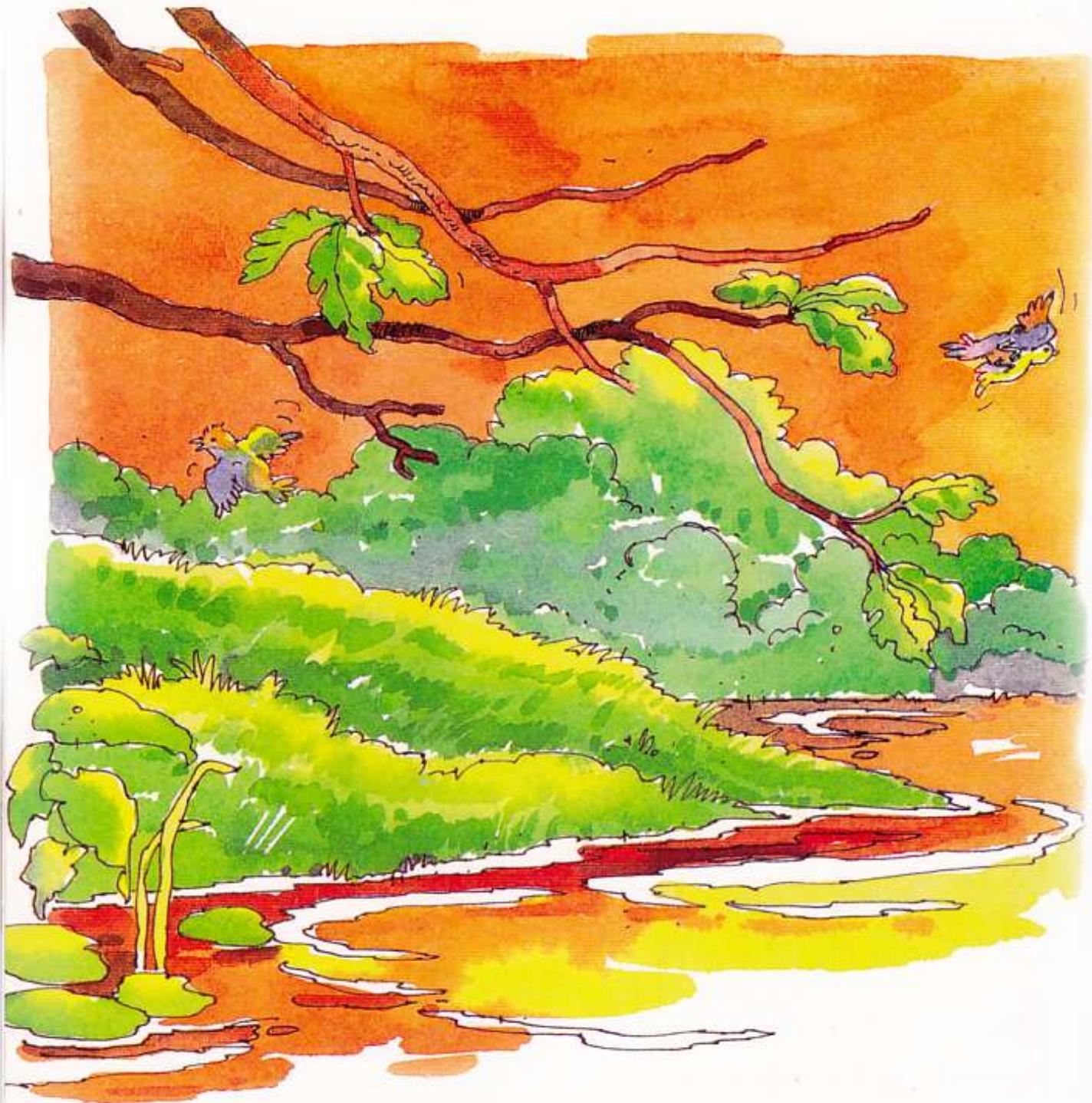
आओ सीखें शब्द सलोने

1. रंभाई – गाय रंभाती है। कुछ कहती है। उसके रंभाने में एक प्यार भरा आग्रह होता है। गाय रंभाती है। कुत्ता भौंकता है। हाथी चिंघाड़ता है। शेर दहाड़ता है। घोड़ा हिनहिनाता है।
2. चाकी – चाकी बोलचाल की भाषा में चक्की को कहते हैं। हाथ से आटा पीसने की चक्की।
   चक्की पत्थर की होती है। इसके दो पाट होते हैं। नीचे का पाट एक जगह खड़ा रहता है। ऊपर का पाट चलता रहता है। इसमें अनाज पीसा जाता है। दलिया बनाया जाता है। दालें दली जाती हैं।
3. परभाती – प्रभाती एक राग का नाम है। इसे सवेरे गाया जाता है। सवेरा प्रभात भी कहलाता है। बोलचाल की भाषा में यह राग परभाती कहलाता है।
4. हरजस – हरजस भजनों को कहते हैं। हरि (हर) का यश (जस) गाना बहुत अच्छा माना जाता है। पुराने जमाने में दादी, नानी अपने घर में सवेरे-सवेरे प्रभाती राग में हरजस गाती थीं और साथ-साथ चाकी भी चलाती थीं।
5. चुग्गा – रोज सवेरे कबूतरों को दाना डालना बहुत अच्छा माना जाता है। हमारा दिन पक्षियों के प्रति प्यार जताने से शुरू हो तो मन में दिन भर पक्षी जैसी ही उमंग रहती है। मन हल्का-फुल्का रहता है। इसलिए सवेरे उठकर पक्षियों को चुग्गा डालने का रिवाज बहुत पुराना है।
6. नीरी – हर सवेरे गायों को पानी पिलाना व चारा डालना बहुत जरूरी है। नीर पानी को कहते हैं। मगर बोलचाल की भाषा

में चारा-नीरा एक दूसरे के पर्यायवाची के रूप में काम में लाये जाते हैं।

7. बिलोई – दही को लकड़ी की मथनी से मथा जाता है। मथनी को दायें-बायें घुमाने के लिए एक डोरी काम में लाई जाती है। मथनी को झेरनी भी कहते हैं। दही को मथना ही बिलोना कहलाता है। राजस्थानी में इसे 'बिलोना' कहते हैं। गांवों में घर-घर रोज सवेरे छाछ बिलोई जाती है। छाछ को बिलोने से ताजा मक्खन निकलता है। छोटे बच्चे रोज सवेरे मक्खन-रोटी का कलेवा करते हैं। छाछ पीते हैं।

8. कलेवा – कलेवा नाश्ते को कहते हैं। गांवों में छाछ-राबड़ी व मक्खन-रोटी का कलेवा किया जाता था। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान में यह आम प्रथा थी। गांवों के लोग आज भी 'कलेवा करना' ही अच्छा प्रयोग मानते हैं। नाश्ता शब्द ही उनको नहीं सुहाता है, क्योंकि इसका प्रारंभ ही 'ना' से होता है।

9. बुहारी – बुहारी झाड़ू को कहते हैं। गांवों में रोज सवेरे हर घर में बुहारी लगाई जाती है। इसीलिए झाड़ू लगाने के काम को बुहारना भी कहते हैं।

10. सुलगा – चूल्हा सुलगाया जाता है। चूल्हे की आग अच्छी (सु) लगती है। शुभ लगती है। जलाना अच्छा शब्द नहीं है। इसलिए गांवों में सदियों से चूल्हा जलाने को ही सुलगाना कहते हैं।

चंदू प्रेस, दिल्ली-110092 द्वारा मुद्रित